

बुन्देलखंड में बुन्देला रियासतों का आपसी संघर्ष (1752-1837)

सूर्यकान्त मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास विभाग

पंडित जवाहर लाल नेहरू पीजी कॉलेज बाँदा

छत्रसाल के पश्चात हृदयशाह एवं जगतराज के शासनकाल तक बुन्देलों में आपसी सौहार्द बना रहा। इनके शासनकाल तक किसी प्रकार की आपसी कलह एवं युद्ध की कोई जानकारी नहीं मिलती। लेकिन इनकी मृत्यु के पश्चात बुन्देलों में आपसी युद्ध प्रारम्भ हो गये। बुन्देलों के आपसी युद्धों में मराठे भी हस्तक्षेप करने लगे थे। हृदयशाह की मृत्यु के पश्चात इनके ज्येष्ठ पुत्र सभा सिंह को पन्ना राज्य का राजसिंहासन उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ। परन्तु सभा सिंह के छोटे भाई पृथ्वी सिंह ने पन्ना राज्य पर अपना दावा प्रस्तुत किया। अंततः पृथ्वी सिंह पूना जाकर बालाजी बाजीराव से सहायता मांगी, जिसके बदले पृथ्वी सिंह पेशवा को अपने भाग की चौथ देने की बात कही। तब पेशवा, पृथ्वी सिंह की सहायता के लिये गोविन्द बल्लाल खेर को भेजा। सभा सिंह और पृथ्वी सिंह के मध्य उत्तराधिकार युद्ध हुआ। जिसमें सभा सिंह को पराजित होना पड़ा और पन्ना राज्य का आधा भाग पृथ्वी सिंह को देना पड़ा जिसके अन्तर्गत शाहगढ़ एवं गढ़कोटा का क्षेत्र आया। यह युद्ध बुन्देलों का प्रथम उत्तराधिकार युद्ध था।

सभा सिंह के तीन पुत्र थे हिन्दूपत, अमान सिंह, खेत सिंह जिनमें हिन्दूपत सबसे बड़े पुत्र थे परन्तु सभा सिंह, अमान सिंह की योग्यता एवं उदारता पर अत्यन्त प्रसन्न रहते थे। जिससे सभा सिंह ने अमान सिंह को युवराज घोषित किया। सभा सिंह की मृत्युपरान्त सन 1752 ई० में अमान सिंह पन्ना की राजगद्दी में आसीन हुये। अमान सिंह निःसंतान थे। सन 1758 ई० में हिन्दूपत ने राजसत्ता के लोभवश अमान सिंह की हत्या कर दी तथा राजसिंहासन के लिये यह संघर्ष दुर्ग तालाब (चित्रकोट) में हुआ था। हिन्दूपत की तरफ से बेनी हुजुरी तथा राज्य की तरफ से खेमराज चौबे कालिंजर की लड़ाई भी दुर्ग तालाब पर हो गयी जिसमें खेमराज विजयी रहे। हिन्दूपत के तीन पुत्र थे, अनिरुद्ध सिंह, धौकल सिंह और सरमेद सिंह। सरमेद सिंह इन सबमें बड़े थे। किन्तु हिन्दूपत अनिरुद्ध सिंह को उत्तराधिकारी युवराज और बेनी हुजुरी को दीवान नियुक्त किया। हिन्दूपत की मृत्यु सन 1776 ई० को हुयी। अनिरुद्ध सिंह ने शासन सत्ता संभालते ही बेनी हुजुरी को मैहर की जागीर का जागीरदार नियुक्त किया। अनिरुद्ध सिंह के समय इनका शासकीय कार्य बेनी हुजुरी और खेमराज चौबे ही देखते थे। कुछ समय पश्चात खेमराज चौबे और बेनी हुजुरी की आपस में अनबन हो गयी। जिसमें अनिरुद्ध सिंह ने बेनी हुजुरी का पक्ष लिया, जिससे खेमराज चौबे अनिरुद्ध सिंह से क्रुद्ध होकर सरमेद सिंह को पन्ना राज्य के लिये प्रेरित किया। खेमराज चौबे सरमेद सिंह को नौने अर्जुन सिंह सुगिरा से सहायता हेतु सलाह दिया। सरमेद सिंह और अर्जुन सिंह सेना सहित छतरपुर के निकट गठेवरा नामक मैदान पर आ डटे। गठेवरा के मैदान में अनिरुद्ध सिंह की तरफ से बेनी हुजुरी सेना का संचालन कर रहा था। अर्जुन सिंह ने अदम्य साहस का परिचय देते हुये बेनी हुजुरी को मार गिराया। इसी समय अनिरुद्ध सिंह सन 1780 ई० में स्वर्ग सिंघार गये। तत्पश्चात सरमेद सिंह पन्ना की राजगद्दी में आसीन हुये। 1785 ई० में सरमेद सिंह की मृत्यु के पश्चात उनके छोटे भाई धौकल सिंह ने राजसत्ता सम्हाली। बुन्देलों के आपसी युद्धों से बुन्देलखण्ड की राजव्यवस्था बिगड़ती चली गयी, और जागीरदार अपने को स्वतंत्र घोषित करने लगे। खेमराज चौबे के पश्चात इनका पुत्र रामकृष्ण चौबे कालिंजर में राज्य स्थापित कर लिया। सरमेद सिंह एवं अनिरुद्ध सिंह के उत्तराधिकार युद्ध के समय कुंवर सोनेशाह पंवार जो सरमेद सिंह का सेनापति था, ने कमजोर केन्द्रीय शासन के अभाव में छतरपुर को स्वतंत्र राज्य घोषित कर राज्य करने लगा।

जगतराज की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्रों में भी जैतपुर राज्य के लिये आपसी युद्ध प्रारम्भ हो चुके थे। जगतराज ने ज्येष्ठ पुत्र कीरत सिंह को युवराज घोषित किया। परन्तु कीरत सिंह की मृत्यु पिता जगतराज के शासनकाल में हो गयी थी। कीरत सिंह के दो पुत्र थे गुमान सिंह एवं खुमान सिंह। जगतराज की मृत्यु के समय इनके दूसरे पुत्र पहाड़ ही इनके पास थे। मौका देखते ही पहाड़ सिंह ने अपने को जैतपुर राज्य का शासक घोषित कर दिया। जगतराज की मृत्यु के समय गुमान सिंह एवं खुमान सिंह अजयगढ़ में थे। जब जगतराज की मृत्यु का समाचार इनको मिला तो ये दोनों जयपुर की राजगद्दी के लिये अपना दावा प्रस्तुत किया, जिसे पहाड़ सिंह ने अस्वीकार कर दिया। गुमान सिंह एवं खुमान सिंह के सेनापति लाल दीवान तथा पहाड़ सिंह के मध्य भयंकर युद्ध हुआ जिसमें लाल दीवान को पराजय हाथ लगी। परन्तु गुमान सिंह तथा खुमान सिंह, पहाड़ सिंह को अंत तक तंग करते रहे। बुन्देलो की वही विशाल शक्ति जो कभी मुगलों से लोहा लिया करते थे अब वे आपसी युद्धो लड़कर खर्च करने लगे। सन 1765 ई० में पहाड़ सिंह ने अपनी अंतिम अवस्था में बहुत ही बुद्धिमानी से काम लिया। अपने वंशजों को भावी युद्ध से बचाने के लिये भाई केहर सिंह के प्रयास से गुमान सिंह एवं खुमान सिंह को अपने पास बुलाकर राज्य का बंटवारा कर दिया। जिससे जैतपुर के उत्तराधिकार युद्ध का अंत हो गया।

पन्ना के राजा सभा सिंह के तीन पुत्र थे, अमान सिंह, हिन्दूपत, खेत सिंह। सभा सिंह अमान सिंह की विद्वता पर अत्यन्त प्रसन्न रहता था। जिससे सभा सिंह ने अमान सिंह को युवराज घोषित कर दिया। राज्य की जनता भी अमान सिंह उदारता पर प्रसन्न रहती थी। 28 मई सन 1752 ई० को सभा सिंह की मृत्यु के पश्चात पन्ना की गद्दी को लेकर उसके तीन पुत्रों अमान सिंह, हिन्दूपत और खेत सिंह में संघर्ष शुरू हो गया। पहले अमान सिंह राजा बना और पेशवा बाजीराव ने उसे 6 लाख 25 हजार रुपये का नजराना देने को राजी हो जाने पर मान्यता दे दी पर अमान सिंह बड़ी कठिनाई से भाइयों के बीच गृह युद्ध की स्थिति में किसी तरह लगभग 6 वर्ष तक शासन कर सका। अमान सिंह पन्ना का शासन कार्य अधिकतर चित्रकूट में रहकर ही देखता था। राजा बनने के लालच में हिन्दूपत ने सन 1757 ई० में दुर्ग तालाब (चित्रकोट) के युद्ध में अमान सिंह का वध करके स्वयं सत्ता में काबिज हो गया। अमान सिंह की हत्या के पश्चात राज्य में गृह युद्ध छिड़ गया। हिन्दूपत की तरफ से बेनी हुजुरी एवं मृत अमान सिंह की तरफ से खेमराज चौबे ने युद्ध किया। जिसमें खेमराज चौबे विजयी रहा तथा कालिंजर पर चौबे सत्ता बनी रही।

जैतपुर के राजा पहाड़ सिंह ने सन 1765 ई० में साम्राज्य विभाजन में भाई कीरत सिंह के पुत्र गुमान सिंह को बांदा एवं अजयगढ़ के परगने दिये। जिस समय गुमान सिंह ने बांदा राज्य की स्थापना किया। उसी समय से गुमान सिंह अपने सेनापति नौने अर्जुन सिंह सहित बांदा में रहने लगे। परन्तु सन 1778 ई० में गुमान सिंह के द्वितीय भाई के पुत्र बखत सिंह ने अपने लिये भी हिस्सा मांगते हुए भारी उपद्रव किया। जिस कारण गुमान सिंह ने बांदा का भू-भाग भतीजे बखत सिंह को दे दिया तथा स्वयं अजयगढ़ में रहने लगा। कुछ समय पश्चात भतीजे बखत सिंह तथा भाई गुमान सिंह से चरखारी के राजा खुमान सिंह असंतुष्ट हो गये। गृह कलह यहां तक बढ़ा कि खुमान सिंह ने 1782 ई० में बांदा पर आक्रमण कर दिया। परन्तु पुनरेशी के मैदान में गुमान सिंह के सेनापति नौने अर्जुन सिंह ने खुमान सिंह को मारकर विजयश्री प्राप्त कर ली थी। सन 1784 ई० में गुमान सिंह ने भूरागढ़ बांदा का किला बनवाया था। खुमान सिंह के पुत्र विजय बहादुर ने नौने अर्जुन सिंह को नीचा दिखाने एवं पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये हिम्मत बहादुर गोंसाई से सम्पर्क स्थापित किया तथा बांदा पर आक्रमण करने को प्रेरित किया। नौने अर्जुन सिंह सुगिरा के रहने वाले थे। जो बांदा-अजयगढ़ की सुरक्षा व्यवस्था करते थे। सन 1790 ई० में अलीबहादुर तथा हिम्मत बहादुर की संयुक्त सेना ने बांदा पर आक्रमण कर दिया अजयगढ़ और बांदा के मध्य बनगांव युद्ध मैदान में हिम्मत बहादुर और नौने अर्जुन सिंह का भयंकर युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन सिंह मारे गये। इस युद्ध का कवि

पदमाकर ने 'हिम्मत बहादुर विरूदावली' में बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। अर्जुन सिंह एक वीर और पराक्रमी सेनापति थे। अर्जुन सिंह की मृत्यु के पश्चात पूर्वी बुन्देलखण्ड को भारी आक्रामक आपदाओं का सामना करना पड़ा। बांदा से बखत सिंह को भगाकर अलीबहादुर ने अपना मुख्यालय बना लिया। बांदा को अपने आधिपत्य में लेकर अलीबहादुर तथा हिम्मतबहादुर ने चरखारी के राजा विजयबहादुर की इच्छापूर्ति की। बखत सिंह को गुजारे हेतु नकद दो रुपये प्रतिदिन दिया जाने लगा। सन 1791 में गुमान सिंह अजयगढ़ के एक मात्र पुत्र मधुकरशाह का निधन हो गया। जिस कारण गुमान सिंह ने बखत सिंह को अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। सन 1792 ई0 में गुमान सिंह की मृत्यु हो गयी।

गुमान सिंह की मृत्युपरान्त भतीजे बखत सिंह राजा बनकर अजयगढ़ आये। उस समय अजयगढ़ दुर्ग का दुर्गाध्यक्ष लक्ष्मण दौआ था। जो क्षेत्र में लूट और अराजकता के लिये प्रसिद्ध था। अजयगढ़ दुर्ग अजेय रहा जो केंदार पर्वत पर स्थित है। किले में एक शिलालेख के अनुसार इसका नाम जयपुर दुर्ग रहा है। परन्तु यहां अजयपाल रहा करता था जिस कारण इसका नाम अजयगढ़ पड़ गया। किला केंदार पर्वत की चोटी पर 3 गज चौड़ी प्रस्तर दीवार के परकोटे के अन्दर है। पहाड़ी सीधी है जिससे दुर्ग तक कठिनाई से जाया जा सकता है। ऐसे सुरक्षित स्थल में रहकर लक्ष्मण दौआ अपनी मनमानी एवं स्वच्छन्दता पूर्वक लूट किया करता था।

बखत सिंह का अजयगढ़ में रहना लक्ष्मण दौआ को अच्छा न लगा। उसने हिम्मत बहादुर के डेन सेनापति कर्नल मिसिल बैंक से सम्बन्ध स्थापित कर सन 1803 ई0 में अजयगढ़ पर आक्रमण करवा दिया। बखत सिंह ने अपनी स्थिति कमजोर समझकर मिसिल बैंक के समक्ष लक्ष्मण दौआ को अपना कामदार एवं अजयगढ़ का किलेदार मान लिया और प्रशासन का दायित्व उसी को दे दिया तथा वार्षिक 30 हजार रुपया गौहरशाही गुजारा खर्च लेकर रहना स्वीकार कर लिया। सन 1803 ई0 में ही कंपनी सरकार की ओर से कर्नल पावेल और जान बेली मराठी बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अधिग्रहण को आये। अंग्रेजी सत्ता स्थापना से मराठों त्रस्त स्थानीय बुन्देला शासकों को शांति मिली। बुन्देला शासकों ने मराठों के विरुद्ध कंपनी सरकार से सुरक्षात्मक समझौते किये। बखत सिंह भी अपनी स्थिति सुदृढ़ करने मराठों और गुसाइयों से आक्रमणों से सुरक्षित होने एवं लक्ष्मण दौआ के दबाव से विमुक्त होने के लिये कंपनी सरकार सुरक्षात्मक समझौता कर लेना उचित समझा। बखत सिंह ने अपनी ओर से कामदार लक्ष्मण दौआ को ही कंपनी सरकार के राजनीतिक प्रतिनिधि जान बेली के पास समझौता एवं इकरार करने भेजा। 09.12.1806 ई0 को कंपनी सरकार के मध्य समझौता हो गया। लक्ष्मणदौआ के इकरार के आधार पर कंपनी सरकार ने सन 1807 ई0 में बखत सिंह के नाम कोटरा क्षेत्र सहित 608 ग्रामों के अजयगढ़ राज्य की सनद दी थी। इस समझौते एवं इकरार शर्तें निम्नलिखित थी।

1. मैं किसी भी लुटेरे एवं डाकू दल से सम्बन्ध न रखूंगा।
2. मैं राज्यान्तर्गत घाटो एवं मार्गों की सुरक्षा करूंगा।
3. कंपनी सरकार की सेना जब घाटी क्षेत्र में प्रवेश करेगी, तो मैं उसकी सहायता करूंगा।
4. मैं जगतराज एवं पेशवा वाली हीरा खदानों पर अधिकार न करूंगा।
5. मैं अजयगढ़ दुर्ग को दो वर्ष पश्चात खाली कर दूंगा तथा चार हजार रुपये वार्षिक कर दिया करूंगा।
6. मैं राज्य से कंपनी सरकार के भगोड़े अपराधियों को पकड़कर कंपनी सरकार को दिया करूंगा।
7. मैं राज्य में चोर डाकूओं को शरण न दूंगा।
8. मैं किसी विश्वस्त व्यक्ति को कंपनी सरकार की सेवा में रखूंगा।
9. मैं राजाराम, गोटी जमादार, भीम दौआ आदि डाकूओं को शांति से रहने और लूट न करने का उत्तरदायित्व लेता हूं।

सनद के दूसरे वर्ष सन 1808 ई० में कंपनी सरकार ने बखत सिंह को दी जाने वाली 30 हजार रूपया वार्षिक गुजारा भत्ता बंद कर दिया जबकि अपने वचन के अनुसार लक्ष्मण दौआ ने अजयगढ़ दुर्ग एवं उसके समीपवर्ती भूमि से कब्जा न छोड़ा था, बल्कि उसके आस-पास के क्षेत्रों में डाके डालकर जनता को और अधिक आतंकित कर दिया था। बखत सिंह की यह विशिष्ट सूझ-बूझ थी, कि उन्होंने इकरार लक्ष्मण दौआ से कराया और सनद स्वयं प्राप्त की। लक्ष्मण दौआ स्वयं बड़ा डाकू था तथा क्षेत्र के अन्य डाकू दलों से सम्बन्ध स्थापित कर, क्षेत्र के लोगो तथा बखत सिंह पर दमनात्मक प्रभाव डाला करता था। उसका दमन एक समस्या थी। इसीलिये बखत सिंह ने कंपनी सरकार के साथ इकरार कराकर लक्ष्मण सिंह ने कंपनी सरकार के साथ इकरार कराकर, लक्ष्मण दौआ के दमन का दायित्व कंपनी सरकार पर ही डाल दिया। इसीलिये जब कंपनी सरकार ने उनकी पेंशन बंद की तो उन्होंने मांग की जब तक लक्ष्मण दौआ अजयगढ़ दुर्ग एवं समीपवर्ती भूमि नहीं छोड़ता तब तक उनकी पेंशन रोकना न्यायोचित नहीं है। जब कंपनी सरकार को लक्ष्मण दौआ के विरुद्ध दमनात्मक कार्यवाही करनी पड़ी। जनवरी 1908 में कर्नल मार्टिनडेल के नेतृत्व में कंपनी सरकार की सेना ने अजयगढ़ पर आक्रमण किया। अंग्रेजी सेना को रिगौली के पहाड़ी मार्ग पर लक्ष्मण दौआ के सरकार खासकलम सरदार सिंह एवं अयोध्या प्रसाद यादव से पहला संघर्ष करना पड़ा। आड़े तिरछे रास्ते होने के कारण कम्पनी सैनिकों को कड़ा संघर्ष करना पड़ा। अयोध्या प्रसाद यादव सहित उसके 60 सिपाही मारे गये शेष पहाड़ी में छिपकर भाग गये। इस संघर्ष में कंपनी सेना के भी 28 सैनिक मारे गये तथा 115 सैनिक घायल हुये। 11 फरवरी 1809 को अंग्रेजी सेना ने पश्चिमोत्तर दिशा में भौता पहाड़ के रास्ते से दुर्ग पर आक्रमण किया। 12 फरवरी को अंग्रेजी तोपखाने ने गोले बरसाकर लक्ष्मण दौआ को भयभीत कर दिया। तत्पश्चात लक्ष्मण दौआ ने आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजी सेना को विजय प्राप्त हो गयी। परन्तु उसका एक कर्नल लेफ्टिनेंट जैमीसन मारा गया था। कंपनी सरकार ने अजयगढ़ दुर्ग जीतकर बखत सिंह को दे दिया। लक्ष्मण दौआ असंतुष्ट होकर शिकायत करने एवं अपनी सुरक्षा तथा पेंशन के लिये कलकत्ता जाकर जान रिचर्डसन से मिला। रिचर्डसन ने सुरक्षा एवं पेंशन हेतु आश्वासन दिया था। तत्पश्चात बखत सिंह ने कंपनी सरकार से नया समझौता सन 1812 में पुनः किया। बखत सिंह के दो पुत्र माधव सिंह और महीपत सिंह थे। 21 जून 1837 ई० को बखत सिंह का निधन हो गया।

बखत सिंह की मृत्युपरान्त उसके नाबालिग ज्येष्ठ पुत्र माधव सिंह सिंहासना रुढ़ हुये। माधव सिंह की नाबालिगी में शासन प्रबन्ध कंपनी सरकार के राजनीतिक प्रतिनिधि के द्वारा संचालित होता था। सन 1843 ई० में कंपनी सरकार ने उन्हें शासन प्रबन्ध का पूर्ण उत्तरदायित्व सौंप दिया। परन्तु 6 वर्ष शासन करने के पश्चात माधव सिंह निःसंतान स्वर्ग सिंघार गये।

महीपत सिंह, माधव सिंह के छोटे भाई थे। माधव सिंह के कोई वैध पुत्र नहीं था जिससे महीपत सिंह को राजसिंहासन प्राप्त हुआ। माधव सिंह की मृत्युपरान्त राजगद्दी के दो दावेदार सामने आये। प्रथम मृत माधव सिंह के छोटे भाई महीपत सिंह दूसरा उसका दासी पुत्र लोकपाल सिंह। परन्तु लार्ड डलहौजी ने लोकपाल सिंह का आवेदन निरस्त कर दिया। महीपत सिंह चार वर्ष शासन करने के पश्चात सन 1853 ई० में स्वर्गवासी हो गये।

विजय सिंह राजा महीपत सिंह के पुत्र थे। जो 2 वर्ष ही शासन कर पाये थे कि अल्पायु में निःसंतान मृत्यु हो गयी। विजय सिंह के अल्पायु में निःसंतान निधन से राज्य में अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी। राज्य की व्यवस्था महीपत सिंह की विधवा महारानी राजमाता विजय सिंह की मां के हाथ थी। वैध उत्तराधिकारी के अभाव में लार्ड डलहौजी ने अजयगढ़ राज्य को कंपनी राज्य में विलय की लिखा पढ़ी कोर्ट आफ डायरेक्टर्स को कर दी थी। जबकि फरजंद अली नामक विरोधी सरकार ने लोकपाल सिंह को राज्य दिये जाने की मांग की। राजमाता और लोकपाल सिंह के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। राजमाता ने लोकपाल सिंह के विरोध में रंजोर सिंह

का पक्ष लिया तथा राजगद्दी के लिये कंपनी सरकार से सिफारिश किया। जबकि फरजंद अली रंजोर सिंह को महीपत सिंह का दासी पुत्र कहता था। इसी समय 1857 ई० में राजमाता ने कंपनी सरकार का साथ दिया। विद्रोहियों के दमनार्थ बांदा के कलेक्टर मि० चेस्टर को दो तोपों सहित 200 बंदूकची सैनिक और कुछ घुड़सवार सहायतार्थ भेजे। इसके अतिरिक्त नागौद के पॉलिटिकल एजेण्ट मि० एलिस गदर के समय बांदा भागे और अजयगढ़ में शरण ली। राजमाता के सहयोग से प्रसन्न होकर कंपनी सरकार ने रंजोर सिंह को अजयगढ़ का राजा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी।

सन्दर्भ

1. गुप्ता, बी०डी०, "लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ महाराजा छत्रसाल बुन्देला", रेडिएन्ट पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1980 पेज-40
2. गुप्ता, बी०डी०, "बाजीराव मस्तानी एवं उनके वंशज बांदा के नवाब", विद्या मन्दिर प्रकाशन, ग्वालियर, 1984 पेज-21
3. इरविन, विलियम, "बंगश नवाब्स ऑफ फर्रुखाबाद (1713-1857)" पार्ट-1-हिस्ट्री, लिटरेचर, नं०-द्वितीय कलकत्ता, 1879 पेज-105
4. तिवारी, गोरेलाल, "बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास", काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1934, पेज-185
5. त्रिपाठी, काशीप्रसाद, "बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास-राजतंत्र से जनतंत्र", समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पेज-133
6. गुप्ता, बी०डी०, "बाजीराव मस्तानी एवं उनके वंशज बांदा के नवाब", विद्या मन्दिर प्रकाशन, ग्वालियर, 1984, पेज-22
7. एसियाटिक सोसाइटी एन्चुअल रजिस्टर, वैल्यूम" पृष्ठ-33, सन 1908